



EMRS (PGT)

हिन्दी

एकलव्य मॉडल आवासीय विद्यालय

भाग - 1



विषय सूची

क्र.सं.	अध्याय	पृष्ठ सं.
	खंड क	
1.	इतिहास एवं साहित्य	1
	➤ आदिकाल:- (1000 ई. से 1350 ई. तक)	1
	➤ आदिकालीन अपभ्रंश साहित्य	21
	➤ भक्तिकाल [1350 ई. से 1650 ई. तक]	23
	➤ सूरोच्छिष्टं जगत्सर्वम् (Sūrochchhiṣṭam Jagatsarvam)	43
	➤ रामाश्रयी काव्य धारा	50
	➤ भारतीय भक्ति पद्धति से सम्बंधित प्रमुख वाद/सम्प्रदाय/दर्शन/शाखा का नाम	65
	➤ रीतिकाल (1650 ई. से 1850 ई. तक)	68
	➤ आधुनिक काल (1850 ई. से अब तक)	81
	➤ भारतेन्दु युग [1850 ई. से 1900 ई. तक]	82
	➤ द्विवेदी युग (1900 ई. – 1920 ई.)	89
	➤ छायावाद काल (1918 ई. से 1986/1988 ई. तक)	97
	➤ प्रगतिवाद-काल - (1936 ई. से 1943 ई. तक)	113
	➤ प्रयोगवाद काल (1943 ई. - 1953 ई. तक)	117
	➤ नयी कविता (नवलेखन काल) (1953 ई. से अब तक)	123
2.	गद्य साहित्य का विस्तृत अध्ययन	130
	➤ हिन्दी गद्य साहित्य	130
	➤ कहानी	150
	➤ नयी कहानी (1950 ई. से 1960 ई. तक)	158
	➤ हिन्दी नाटक	167
	➤ एकांकी (एंकाकी)	178
	➤ आत्मकथा	184
	➤ जीवनी	186
	➤ संस्मरण एवं रेखाचित्र	189
	➤ रिपोर्ताज	193
	➤ निबंध	202
	➤ यात्रा-साहित्य	213

इतिहास एवं साहित्य

आदिकाल:- (1000 ई. से 1350 ई. तक)

- हिन्दी साहित्य का प्रथम चरण ही आदिकाल के नाम से पुकारा जाता है।
- भारतीय इतिहास की दृष्टि से जिस समय भारत में सम्राट हर्षवर्धन के साम्राज्य का पतन हो रहा था, उसी समय हिन्दी साहित्य का उद्भव हुआ था।
- अपने प्रारम्भिक काल में अपभ्रंश एवं हिन्दी भाषा का सम्मिलित प्रयोग किया जाता था। इस अपभ्रंश मिश्रित हिन्दी को अलग-अलग विद्वानों के द्वारा अलग-अलग नामों से पुकारा गया है, यथा –

क्र. सं.	विद्वान का नाम	नामकरण
1.	डॉ. भोलाशंकर व्यास	अवहट्ट
2.	आचार्य रामचन्द्र शुक्ल	प्राकृताभास हिंदी
3.	चन्द्रधर शर्मा गुलेरी	पुरानी हिंदी
4.	विद्यापति	देसिल बनिआ
5.	डॉ. नागेन्द्र	विकसित अपभ्रंश

- आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने हिन्दी के आदिकाल को "अत्यधिक विरोधों एवं व्याघातों का युग" कहकर पुकारा है।
- डॉ. नागेन्द्र ने हिन्दी साहित्य के आदिकाल को "आक्रमण एवं युद्धों के प्रभाव की मनःस्थिति का प्रतिफल" कहकर पुकारा है।

आदिकाल का नामकरण

- हिन्दी साहित्य के प्रथम चरण को अलग-अलग विद्वानों द्वारा निम्नानुसार अलग-अलग नामों से पुकारा गया है –

क्र. सं.	विद्वान का नाम	नामकरण
1	आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी	आदिकाल
2	आचार्य रामचंद्र शुक्ल	वीरगाथा काल
3	महावीर प्रसाद द्विवेदी	बीज वपन काल
4	राहुल सांकृत्यायन	सिद्ध-सामंत काल
5	डॉ. रामकुमार वर्मा	संधि-चारण काल
6	जॉर्ज अब्राहम ग्रियर्सन	चारण काल
7	मिश्रबन्धु	आरम्भिक काल
8	डॉ. गणपतिचन्द्र गुप्त	प्रारम्भिक काल/शून्य काल
9	डॉ. रामशंकर शुक्ल 'रसाल'	जय काव्य काल/बाल्यावस्था
10	आचार्य विश्वनाथ प्रसाद	वीरकाल
11	बाबू श्यामसुंदर दास	वीरकाल/अपभ्रंश काल
12	चंद्रधर शर्मा 'गुलेरी'	अपभ्रंश काल
13	धीरेंद्र वर्मा	अपभ्रंश काल
14	डॉ. बच्चन सिंह	अपभ्रंश काल: जातीय साहित्य का उदय

15	डॉ. हरीश	उत्तर-अपभ्रंश काल
16	राम खिलावन पांडेय	संक्रमण काल
17	हरिश्चंद्र वर्मा	संक्रमण काल
18	राम प्रसाद मिश्र	संक्रांति काल
19	मोहन अवस्थी	आधार काल
20	शैलेश जैदी	आविर्भाव काल
21	डॉ. पृथ्वीनाथ कमल 'कुलश्रेष्ठ'	अंधकार काल
22	डॉ. शंभुनाथ सिंह	प्राचीन काल

आदिकाल की प्रमुख शैलियाँ:-

➤ आदिकालीन साहित्य में प्रमुखतः निम्न दो प्रकार की शैलियों का प्रयोग हुआ है –

1. डिंगल शैली
2. पिंगल शैली

1. डिंगल शैली

- a. राजस्थानी मिश्रित अपभ्रंश को डिंगल शैली कहा जाता है।
- b. इस शैली में कठोर एवं कर्कश शब्दावली का अधिक प्रयोग किया जाता है।

2. पिंगल शैली

- a. ब्रज मिश्रित अपभ्रंश भाषा को पिंगल शैली कहा जाता है।
- b. इस शैली में कोमल एवं कान्त पदावली का अधिक प्रयोग किया जाता है।

आदिकालीन साहित्य की प्रवृत्तियाँ:-

➤ आदिकालीन साहित्य में प्रमुखतः तीन प्रकार की प्रवृत्तियों का प्रयोग हुआ है –

1. वीर गाथात्मकता – रासो साहित्य की रचनाओं में।
2. धार्मिकता – रास, सिद्ध एवं नाथ साहित्य की रचनाओं में।
3. श्रृंगारिकता – विद्यापति की "पदावली" रचना में।

हिन्दी साहित्य का आदिकवि/सर्वप्रथम कवि

1. ठाकुर शिव सिंह सेंगर के अनुसार – पुष्य या पुण्ड
2. डॉ. रामकुमार वर्मा के अनुसार – स्वयं भू (693 ई. – 750 ई.)
3. आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के अनुसार – अब्दुल रहमान (13वीं शताब्दी)
4. डॉ. गणपतिचन्द्र गुप्त के अनुसार – शालिभद्र सुरि (1784 ई.)
5. चन्द्रधर शर्मा गुलेरी के अनुसार – राजा मुंज (993 ई.)
6. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के अनुसार – राजा मुंज (प्रथम कवि) / चंदबरदाई (प्रथम महाकवि)
7. डॉ. बच्चन सिंह के अनुसार – विद्यापति

8. राहुल सांकृत्यायन के अनुसार – सरहपा (सरहपाद) (769 ई.)

- सर्वमान्यता अनुसार – सरहपा (सरहपाद)
- मिश्रबंधुओं के अनुसार – प्रथम कवि: चंदबरदाई
- भागीरथ मिश्र के अनुसार – गोरखनाथ (10-11वीं शताब्दी)

हिन्दी साहित्य की सर्वप्रथम रचना

- रचनाकार – श्रावकाचार
- लेखक – आचार्य देव सेन
- रचनाकाल – 933 ई.
- विषयवस्तु – इस रचना में कुल 250 दोहे प्राप्त होते हैं जिनमें श्रावक (जैन) धर्म के सिद्धांतों का वर्णन किया गया है।

आदिकालीन साहित्य का विभाजन

- आदिकाल में लिखे गए समस्त हिन्दी साहित्य को निम्नानुसार चार श्रेणियों में विभाजित किया गया है –

1. रासो साहित्य या चारण साहित्य
2. रास साहित्य या जैन साहित्य
3. सिद्ध साहित्य या बौद्ध साहित्य
4. नाथ साहित्य

➤ नोट:

1. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल इनमें से केवल रासो साहित्य को ही आदिकालीन साहित्य के रूप में स्वीकार करते हैं। शेष तीनों साहित्य को उन्होंने "सांप्रदायिक शिक्षा मात्र" कहकर पुकारा है।
2. आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने इन चारों को ही आदिकालीन साहित्य के रूप में स्वीकार किया है।
3. आदिकाल में ही कुछ रचनाएँ ऐसी भी प्राप्त होती हैं जिन्हें उपर्युक्त चारों में स्थान नहीं दिया जा सकता। ऐसे साहित्य को –
 - ✓ आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने "आदिकालीन फुटकल साहित्य" कहा।
 - ✓ डॉ. नागेन्द्र ने "आदिकालीन स्वतंत्र साहित्य" कहा।

1. रासो साहित्य/चारण साहित्य

- रासो शब्द की व्युत्पत्ति:- रासो शब्द की रचना के संदर्भ में अलग-अलग विद्वानों द्वारा निम्नानुसार अलग-अलग मत प्रतिपादित किए गए हैं –

1. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने "बीसलदेव रासो" रचना में "रसायण" शब्द के आधार पर रासो शब्द की व्युत्पत्ति "रसायन" शब्द से ही मानी है।
2. आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने अब्दुल रहमान द्वारा रचित "संदेश रासक" रचना के आधार पर रासो शब्द की व्युत्पत्ति "रासक" शब्द से मानी है। उन्होंने इसे निम्नलिखित क्रम में विकसित माना – 'रासक - रासअ - रासा - रासो'
3. गार्सा द तासी ने अपनी रचना में "पृथ्वीराज रासो" रचना के लिए "पृथ्वीराज राजसू" शब्द का प्रयोग किया है। इस आधार पर उन्होंने रासो शब्द की उत्पत्ति "राजसू" या "राजसूय" शब्द से मानी है।
4. कविराज श्यामल दास एवं काशीप्रसाद जायसवाल ने रासो शब्द की रचना "रहस्य" शब्द से मानी है।

5. पं. हरप्रसाद शास्त्री एवं श्री विन्ध्येश्वरी प्रसाद पाठक ने इस शब्द की उत्पत्ति "राजयश" शब्द से मानी है।

6. डॉ. दशरथ शर्मा एवं नागरी प्रचारिणी सभा, काशी ने रासो शब्द की उत्पत्ति "रास" शब्द से मानी है।

➤ सर्वमान्य मत:- आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी का मत सर्वाधिक मान्य है।

➤ रासो साहित्य की प्रमुख विशेषताएँ:

- ✓ यह साहित्य चारण कवियों द्वारा अपने आश्रय दाताओं की अतिशयोक्ति पूर्ण प्रशंसा में लिखा गया है।
- ✓ इस साहित्य की रचनाओं में तत्कालीन सामंती जीवन की संपूर्ण झलक देखने को मिलती है।
- ✓ इस साहित्य की रचनाओं में ऐतिहासिकता एवं कल्पना का सुंदर समन्वय किया गया है।
- ✓ रासो (चरित काव्य या कथा काव्य) काव्य की परंपरा को दर्शाता है।
- ✓ इन रचनाओं में युद्धों एवं प्रेम कथाओं का अधिक वर्णन किया गया है।
- ✓ छंदों की विविधता पाई जाती है।
- ✓ इन रचनाओं में वीर एवं श्रृंगार रस की प्रधानता देखने को मिलती है।
- ✓ सिद्ध, जैन एवं नाथ संप्रदाय द्वारा धार्मिक काव्य की रचना की गई है।
- ✓ इस साहित्य की अधिकांश रचनाएँ संदिग्ध या अप्रामाणिक मानी जाती हैं।
- ✓ यह साहित्य चारण कवियों की संकुचित राष्ट्रीयता का प्रतीक भी माना जाता है।
- ✓ इसमें अपभ्रंश-प्रभावित हिन्दी भाषा का प्रयोग किया गया है।
- ✓ लोक साहित्य की रचना में डिंगल एवं पिंगल भाषा का भी प्रयोग किया गया है।

➤ रासो साहित्य की प्रमुख रचनाएँ:

क्र. सं.	रचना का नाम	रचनाकार
1	पृथ्वीराज रासो	चन्द्रबरदाई
2	बीसलदेव रासो	नरपति नाल्ह
3	परमाल रासो	जगनिक
4	खुमाण रासो	दलपति विजय
5	हम्मीर रासो	शार्ङ्गधर
6	विजयपाल रासो	नल्लसिंह भाट
7	बुद्धिरासो	जल्हण (चन्द्रबरदाई के पुत्र)

1. पृथ्वीराज रासो

➤ लेखक – चन्द्रबरदाई

➤ रचनाकाल – 1168 ई. (1225 वि.)

➤ काव्य स्वरूप – श्रव्य, पद्य, प्रबंधात्मक, महाकाव्य

➤ नोट:- आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने “पृथ्वीराज रासो” को हिन्दी का सर्वप्रथम महाकाव्य एवं चन्द्रबरदाई को हिन्दी का सर्वप्रथम महाकवि माना है।

➤ रामकुमार वर्मा ने इसकी शैली पिंगल मानी है, जबकि अन्य इसे डिंगल मानते हैं।

➤ कुल छंद या पद:

✓ **16306 छंद**

✓ **छंद विधान:** इन 16306 पदों की रचना के लिए कुल **68 प्रकार के छंदों** का प्रयोग किया गया है, जिनमें **"छप्पय छंद"** का सर्वाधिक प्रयोग हुआ है।

✓ इसी कारण **छप्पय छंद को चन्दबरदाई का सर्वाधिक प्रिय छंद भी माना जाता है।**

➤ **विभाजन:-** इस रचना का विभाजन **69 समयों** में किया गया है।

➤ **प्रमुख विशेषताएँ:**

✓ इस रचना में अजमेर के राजा **पृथ्वीराज चौहान** एवं कन्नौज के राजा **जयचंद की पुत्री संयोगिता** के प्रेम विवाह एवं **पृथ्वीराज चौहान द्वारा लड़े गए युद्धों** का वर्णन किया गया है।

✓ इस रचना की सर्वप्रथम जानकारी **कर्नल टॉड** द्वारा स्वरचित **"एनाल्स एंड एंटीक्विटीज ऑफ राजस्थान"** में दी गई थी।

✓ **आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, डॉ. नागेन्द्र एवं पं. हरप्रसाद शास्त्री** के अनुसार, इस रचना का **उत्तरार्द्ध भाग चन्दबरदाई के पुत्र जल्हण** द्वारा लिखा गया माना जाता है।

"पुस्तक जल्हण हत्थ दै, चलि गज्जन कृपकाज"

✓ **आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी** ने इस रचना को **अर्ध प्रमाणिक मानते हुए** इसे केवल **"शुक-शुकी संवाद"** कहा है।

✓ **डॉ. नागेन्द्र** ने इस रचना को **"घटनाकोश"** मात्र कहा है।

✓ **बाबू श्याम सुंदर दास एवं उदयनारायण तिवारी** ने इसे **"विशाल वीर काव्य"** कहा है।

सूत्र: "श्याम का उदय विशाल वीर रूप में हुआ है।"

✓ **डॉ. बच्चन सिंह** ने इसे **"राजनीति की महाकाव्यात्मक त्रासदी"** कहा है।

➤ **रचना की प्रमाणिकता के संदर्भ में तीन मत:**

1. **अप्रमाणिक**

2. **अर्ध प्रमाणिक**

3. **प्रमाणिक**

1. **अप्रमाणिक मानने वाले विद्वान:**

✓ **डॉ. वूलर** – 1875 ई. में इस रचना को सर्वप्रथम **अप्रमाणिक घोषित** किया था।

✓ **आचार्य रामचन्द्र शुक्ल** – उन्होंने इसे **पूरा ग्रंथ जारी माना।**

✓ **कविराज मुरारीदान एवं श्यामलदास**

✓ **गौरीशंकर हीरानंद ओझा**

✓ **मुंशी देवी प्रसाद**

(स्मरणीय टिप्पणी: "राम, श्याम, मुरारी, शंकर, देवी" – अशुक्ल श्याम मुरारी गौरी देवी)

2. **अर्ध प्रमाणिक मानने वाले विद्वान:**

✓ **आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी**

✓ **मुनि जिन विजय**

✓ **सुनीति कुमार चटर्जी**

✓ **अगरचन्द नाहटा**

3. **प्रमाणिक मानने वाले विद्वान:**

- ✓ कर्नल टॉड
- ✓ मिश्रबन्धु
- ✓ बाबू श्यामसुंदर दास
- ✓ मोहनलाल विष्णुलाल पांड्या
- ✓ मथुरा प्रसाद दीक्षित
- ✓ डॉ. दशरथ शर्मा
- ✓ अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध'

➤ "कामायनी" के 15 सर्ग

- | | |
|------------|-------------|
| 1. चिंता | 9. इड़ा |
| 2. आशा | 10. स्वप्न |
| 3. श्रद्धा | 11. संघर्ष |
| 4. काम | 12. निर्वेद |
| 5. वासना | 13. दर्शन |
| 6. लज्जा | 14. रहस्य |
| 7. कर्म | 15. आनंद |
| 8. ईर्ष्या | |

➤ ट्रिक:

"बिना चिंता के आशा ने, श्रद्धा से किया काम, वासना को आई लज्जा, कर्म को हुई ईर्ष्या, इड़ा को आया स्वप्न, संघर्ष और निर्वेद का, दर्शन को रहस्य में आया आनंद।"

➤ पश्चिमी हिंदी की बोलियाँ (ट्रिक – "खब्रबुक ह")

- ✓ पश्चिमी हिन्दी में ब्रज हरि के कन्ने खड़ी कौरवी बुंदेली

1. ब्रजभाषा
2. हरियाणवी
3. कन्नौजी
4. खड़ी बोली
5. बुंदेली

➤ पूर्वी हिंदी (ट्रिक – "पूर्वी 36 वध कर बधेली 'अवध'")

1. छत्तीसगढ़ी
2. अवधी (कोसली पूर्वी)
3. बघेली

➤ बिहारी भाषा समूह (ट्रिक – "मग में मेथी भोज करे")

1. मगही
2. मैथिली
3. भोजपुरी

➤ राजस्थानी भाषा समूह (ट्रिक – "मामे ने जय को मारा")

1. मालवी (द.रा.)
2. मेवाती (उ.रा.)
3. जयपुरी (पूर्वी.रा.)
4. मारवाड़ी (प.रा.)

➤ अर्ध प्रमाणिक मानने वाले विद्वान:

- ✓ हजारि प्रसाद द्विवेदी ने "परमाल रासो" को भी अर्ध प्रमाणिक माना है।
- ✓ ट्रिक: "हजार मुनि मुनि अगर अर्ध प्रमाणिक हैं।"
 1. हजारि प्रसाद द्विवेदी
 2. मुनि जिन विजय
 3. सुनीति कुमार चटर्जी
 4. अगरचंद नाहटा

3. प्रामाणिक मानने वाले इतिहासकार:- कर्नल मिश्र, बाबू मोहन, मथुरा, दशरथ, अयोध्या

1. कर्नल टॉड
2. मिश्रबंधु
3. बाबू श्यामसुंदर दास
4. मोहनलाल विष्णुलाल पांड्या
5. मथुरा प्रसाद दीक्षित
6. डॉ. दशरथ शर्मा
7. अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध'

1. पृथ्वीराज रासो रचना की हस्तलिखित प्रतिलिपियाँ

➤ पृथ्वीराज रासो की निम्नलिखित चार हस्तलिखित प्रतिलिपियाँ प्राप्त होती हैं:

1. वृहद संस्करण

✓ 69 समय, 16306 पद (छंद)

✓ नोट:

- इस संस्करण का प्रकाशन सर्वप्रथम नागरी प्रचारिणी सभा, काशी, 1585 ई. में करवाया गया था।
- यह संस्करण वर्तमान में उदयपुर संग्रहालय में सुरक्षित रखा गया है।
- प्रमुख घटना: कैमास वध

2. मध्यम संस्करण

✓ 7000 पद (अप्रकाशित)

✓ इसमें अध्यायों को "प्रस्ताव" कहा गया है।

✓ नोट: यह संस्करण वर्तमान में बीकानेर संग्रहालय में सुरक्षित रखा गया है।

3. लघु संस्करण

✓ 3000 पद, 19 अध्याय (खंड)

✓ नोट:- यह संस्करण भी वर्तमान में बीकानेर संग्रहालय में सुरक्षित रखा गया है।

4. लघुतम संस्करण

✓ 1300 पद

✓ नोट:- डॉ. माता प्रसाद गुप्त एवं डॉ. दशरथ शर्मा ने इसी संस्करण को पृथ्वीराज रासो का मौलिक संस्करण माना है।

2. बीसलदेव रासो

➤ सर्वप्रथम बारहमासा वर्णन – मोतीलाल मेनारिया के अनुसार

➤ समय – 16वीं शताब्दी

➤ पद – 128

➤ लेखक – नरपति नाल्ह

➤ रचनाकाल – 1155 ई. (1212 वि.)

➤ तथ्य: "संवत बारह सौ बहोतरी मझारी, जेठ बदी नवमी बुधवारी। नाल्ह रसायण आरंभ सारदा तूठी ब्रह्माकुमारी॥"

➤ भाषा:- पश्चिमी राजस्थानी

➤ प्रमुख विशेषताएँ:

1. श्रृंगार रस प्रधान इस रचना में कुल 128 पद पढ़ने को मिलते हैं।

2. इस रचना में शाकंभरी (अजमेर) के राजा बीसलदेव तृतीय (विग्रहराज चतुर्थ) एवं मालवा के राजा भोज परमार की पुत्री राजमती के विवाह, वियोग एवं पुनर्मिलन की कथा का वर्णन किया गया है।

3. इस रचना का विभाजन चार खंडों में किया गया है:

प्रथम खण्ड – बीसलदेव तृतीय एवं राजमती के विवाह का वर्णन।

द्वितीय खण्ड – रानी के किसी व्यंग्य से रुष्ट होकर राजा बीसलदेव का उड़ीसा चले जाने एवं बारह महीने तक वहीं रहने का वर्णन।

तृतीय खण्ड – रानी राजमती के "बारहमासा वियोग" का वर्णन।

चतुर्थ खण्ड – राजा बीसलदेव के पुनः अजमेर लौटने एवं रानी राजमती के पुनर्मिलन का वर्णन।

यह कथा कार्तिक मास से शुरू होती है।

➤ अन्य महत्वपूर्ण तथ्य:

✓ हिन्दी साहित्य में "बारहमासा वर्णन" की परंपरा का आरंभ इसी रचना से हुआ माना जाता है।

✓ लगभग 100 पृष्ठों की इस लघु रचना में सर्वत्र "वर्तमान कालिक" क्रियाओं का ही प्रयोग किया गया है।

✓ इस रचना में साहित्यिक भाषा का प्रयोग नहीं करके राजस्थानी, ब्रज एवं मध्यदेश की भाषाओं का सम्मिलित प्रयोग किया गया है।

3. परमाल रासो

➤ लेखक – जगनिक

➤ आश्रयदाता – कालिंजर के चंदेलवंशी राजा परमर्दिदेव

➤ रचनाकाल – 1173 ई. (1230 वि.स.)

➤ राष्ट्रीय भावना का अभाव या संकीर्ण राष्ट्रीयता

➤ प्रमुख विशेषताएँ:

- ✓ यह रचना अपनी गेयता (गाने योग्य होने) के लिए अधिक प्रसिद्ध हुई है।
- ✓ उत्तर प्रदेश एवं उत्तराखंड के बैसवाड़ा, महोबा, बुंदेलखंड आदि क्षेत्रों में इस रचना के पद आज भी लोकगीतों के रूप में गाए जाते हैं।
- ✓ सभी क्षेत्रों में इस रचना को "आल्हा" या "आल्हाखंड" के नाम से पुकारा जाता है।
- ✓ इस रचना में "आल्हा" एवं "ऊदल" नामक दो वीर सामंतों की युद्ध वीरता का वर्णन किया गया है।
- ✓ यह रचना बुंदेली भाषा की "बनाफरी" बोली में लिखी गई है।
- ✓ इस रचना का सर्वप्रथम प्रकाशन 1865 ई. में फर्रुखाबाद (उ.प्र.) के तत्कालीन कलेक्टर "चार्ल्स इलियट" द्वारा "आल्हाखंड" के नाम से करवाया गया था।
- ✓ इस रचना का दूसरा प्रकाशन डॉ. श्यामसुंदर दास के द्वारा नागरी प्रचारिणी सभा, काशी के माध्यम से "परमाल रासो" के नाम से करवाया गया था।
- ✓ आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने इस रचना को भी अर्ध-प्रामाणिक रचना ही माना है।

4. खुमाण रासो

➤ लेखक – दलपति विजय

➤ पदों की संख्या – 5000

➤ रचनाकाल:

- ✓ आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के अनुसार – 9वीं शताब्दी
- ✓ डॉ. मोतीलाल मेनारिया के अनुसार – 17वीं शताब्दी

➤ प्रमुख विशेषताएँ:

1. वीर रस प्रधान इस रचना में राजस्थानी भाषा का प्रयोग किया गया है। इसमें लगभग 5000 पद शामिल किए गए हैं।
2. इस रचना में बगदाद के खलीफा अल मामू और चित्तौड़ के रावल खुमाण के मध्य हुए 24 युद्धों का वर्णन किया गया है।
3. इसमें बप्पा रावल से राजसिंह तक का वर्णन किया गया है।

5. हम्मीर रासो

➤ लेखक – शार्ङ्गधर

➤ रचनाकाल – 1357 ई. (1414 वि.स.)

➤ प्रमुख विशेषताएँ:

1. यह रचना वर्तमान में अपने मूल रूप में उपलब्ध नहीं है।
2. इस रचना के कुछ पद "प्राकृत पैंगलम" से संकलित किए गए हैं।

➤ प्राकृत पैंगलम –

- ✓ इस ग्रंथ में शार्ङ्गधर, विद्याधर, बब्बर और जज्जल नामक चार कवियों द्वारा रचित पदों का संकलन किया गया है। इसके संकलनकर्ता लक्ष्मीधर माने जाते हैं।
- ✓ इस रचना में उल्लिखित "हम्मीर" शब्द को आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने "अमीर" शब्द का ही अपभ्रंश रूप माना है।
- ✓ आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के अनुसार, इसी रचना से "अपभ्रंश भाषा के काव्यों की समाप्ति" मानी जाती है।
- ✓ आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के अनुसार, अपभ्रंश भाषा की अंतिम रचना – "हम्मीर रासो" है।

6. विजयपाल रासो

➤ **लेखक** – नल्लसिंह भाट

➤ **रचनाकाल** – 16वीं शताब्दी (मिश्रबंधुओं के अनुसार - 1298 ई.)

➤ **प्रमुख विशेषताएँ:**

- ✓ इस रचना में मूलतः **अपभ्रंश भाषा** का ही प्रयोग किया गया है, जिसके कारण अधिकतर इतिहासकार इसे हिन्दी साहित्य में स्थान नहीं देते हैं।
- ✓ इस रचना में **विजयगढ़ (करौली)** राज्य के राजा **विजयपाल** और **बंग (बंगाल)** के राजा के मध्य हुए युद्धों का वर्णन किया गया है।
- ✓ वर्तमान में इस रचना के मात्र 42 पद ही उपलब्ध हैं।

रास साहित्य या जैन साहित्य/अपभ्रंश साहित्य भाषा

➤ 12वीं और 13वीं शताब्दी में पश्चिमोत्तर भारत में जैन कवियों द्वारा अपने धर्म के सिद्धांतों के प्रचार-प्रसार हेतु हिन्दी भाषा में रचित साहित्य को "रास साहित्य" कहा जाता है।

➤ **रास साहित्य की प्रमुख विशेषताएँ:**

1. यह साहित्य जैन कवियों द्वारा लिखा गया है।
2. इस साहित्य का प्रमुख उद्देश्य जैन धर्म के सिद्धांतों का प्रचार-प्रसार करना एवं धार्मिक तत्वों का निरूपण करना है।
3. इस साहित्य में केवल जैन धर्म से संबंधित व्यक्तियों को ही चरित नायक बनाया गया है। इसमें प्रकृति का मादक चित्रण भी किया गया है।
4. इस साहित्य की रचनाओं का मूल स्रोत (उपजीव्य ग्रंथ) "जैन पुराण" को माना जाता है।
5. इस साहित्य की रचनाओं के अंत में "रास", "आचार", "फागू", "चरित" आदि शब्दों का प्रयोग किया गया है।

रास साहित्य की प्रमुख रचनाएँ:

1. भरतेश्वर बाहुबली रास

- ✓ **रचनाकार** – शालिभद्र सूरि
- ✓ **विशेष तथ्य:**

1. 1184 ई. में रचित यह खंडकाव्य है, जिसमें कुल 205 पद लिखे गए हैं।
2. इस रचना में शांत, वीर एवं श्रृंगार – तीनों रसों का प्रयोग हुआ है।
3. मुनि जिन विजय के अनुसार, यह रास साहित्य परंपरा की सर्वप्रथम रचना मानी जाती है।
4. डॉ. गणपति चन्द्र गुप्त के अनुसार, शालिभद्र सूरि हिन्दी के सर्वप्रथम कवि हैं।
5. इस रचना में दो भाइयों - "अयोध्या" के राजा भरतेश्वर और "तक्षशिला" के राजा बाहुबली की वीरता का वर्णन किया गया है।

2. पंच पांडव चरित रास

- ✓ **रचनाकार** – शालिभद्र सूरि
- ✓ **विशेष तथ्य:**

1. यह रास साहित्य परंपरा की सर्वप्रथम ऐतिहासिक रचना मानी जाती है।
2. इस रचना में महाभारत के पांडवों की कथा को अहिंसा पर आधारित दर्शाया गया है।
3. इसमें राजस्थानी मिश्रित अपभ्रंश भाषा का प्रयोग हुआ है।

3. बुद्धि रास

✓ रचनाकार – शालिभद्र सूरि

✓ विशेष तथ्य:

- यह रचना जैन धर्म के बौद्धिक एवं नैतिक मूल्यों पर आधारित है।
- इसमें विवेक, नीति और बुद्धिमत्ता से जुड़ी शिक्षाओं को प्रस्तुत किया गया है।
- यह रचना धार्मिक उपदेशात्मक शैली में लिखी गई है।
- इसमें जैन धर्म के सिद्धांतों का गहन विवेचन किया गया है।

4. चंदनबाला रास

✓ रचनाकार – कवि आसगु

✓ विशेष तथ्य:

1. कवि आसगु ने यह रचना लगभग 1200 ई. में जालौर में रहकर रची थी।
2. इस रचना में लगभग 35 पद प्राप्त होते हैं, जिनमें "चम्पानगरी" के राजा दधिवाहन की पुत्री "चंदनबाला" की कथा का वर्णन किया गया है।

5. जीवदया रास

✓ रचनाकार – कवि आसगु

✓ विशेष तथ्य:

- यह रचना जैन धर्म के महत्वपूर्ण सिद्धांत "अहिंसा" और "जीवदया" (सभी जीवों पर दया) पर आधारित है।
- इसमें जीवों की रक्षा, करुणा, एवं अहिंसा के महत्व को विशेष रूप से दर्शाया गया है।
- यह रचना उपदेशात्मक शैली में लिखी गई है और जैन धर्म के दयाभाव से जुड़े आदर्शों का प्रचार करती है।
- इसमें नैतिकता, संयम, और परोपकार को महत्वपूर्ण गुणों के रूप में प्रस्तुत किया गया है।

6. स्थूलिभद्र रास

✓ रचनाकार – जिनि धर्म सूरि

✓ विशेष तथ्य:

- यह रचना जैन धर्म के प्रसिद्ध चरित्र "स्थूलिभद्र" के जीवन पर आधारित है।
- इसमें स्थूलिभद्र की कथा, उनके आध्यात्मिक परिवर्तन, और वैराग्य धारण करने की घटनाओं का वर्णन किया गया है।
- इस रचना में जैन धर्म के मूल सिद्धांतों - संयम, त्याग, और मोक्ष प्राप्ति पर बल दिया गया है।
- इसमें नैतिकता, धार्मिक आदर्शों, और सांसारिक मोह से मुक्ति की प्रेरणा दी गई है।

7. रेवंत गिरी रास

✓ रचनाकार – विजयसेन सूरि

✓ विशेष तथ्य:

- यह रचना जैन धर्म के धार्मिक एवं ऐतिहासिक प्रसंगों पर आधारित है।
- इसमें रेवंत गिरि से संबंधित घटनाओं, धार्मिक मूल्यों और जैन परंपराओं का विस्तृत वर्णन किया गया है।
- इस रचना में जैन संतों की तपस्या, त्याग और आध्यात्मिक उपदेशों को दर्शाया गया है।
- यह काव्य धार्मिक कर्तव्यों, आत्मशुद्धि और मोक्ष प्राप्ति के मार्ग को रेखांकित करता है।

8. नेमिनाथ रास

✓ रचनाकार – सुमति गुणी

✓ विशेष तथ्य:

- यह रचना जैन धर्म के 22वें तीर्थंकर भगवान नेमिनाथ के जीवन पर आधारित है।
- इसमें नेमिनाथ के जन्म, तपस्या, वैराग्य, और मोक्ष प्राप्ति की घटनाओं का विस्तृत वर्णन किया गया है।
- इस रचना में जैन धर्म के प्रमुख सिद्धांतों - अहिंसा, तप, त्याग, और संयम पर विशेष बल दिया गया है।
- नेमिनाथ के विवाह से पहले उनका पशुओं के प्रति दया भाव देखकर संन्यास ग्रहण करने का प्रसंग इस रचना का मुख्य आकर्षण है।
- इसमें धार्मिक और नैतिक आदर्शों को उजागर करते हुए भक्ति भाव को विशेष रूप से दर्शाया गया है।

9. गौतम स्वामी रास

✓ रचनाकार – उदयवंत / विजयभद्र

✓ विशेष तथ्य:

- यह रचना भगवान महावीर के प्रमुख गणधर (मुख्य शिष्य) गौतम स्वामी के जीवन पर आधारित है।
- इसमें गौतम स्वामी के ज्ञान, वैराग्य, एवं आध्यात्मिक यात्रा का वर्णन किया गया है।
- यह रचना जैन धर्म के प्रमुख तत्वों – अहिंसा, त्याग, तपस्या, एवं आत्मज्ञान पर आधारित है।
- गौतम स्वामी की शंकाओं का समाधान और उनका मोक्ष की ओर अग्रसर होना इस रचना का मुख्य विषय है।
- इसमें धार्मिक प्रवचनों और जैन आचार्यों के उपदेशों को महत्वपूर्ण रूप से प्रस्तुत किया गया है।

10. कच्छलि रास

✓ रचनाकार – प्रज्ञा तिलक

✓ विशेष तथ्य:

- यह रचना जैन धर्म से संबंधित धार्मिक एवं नैतिक मूल्यों को दर्शाती है।
- इसमें जैन संतों के तप, त्याग, और साधना का विवरण किया गया है।
- कच्छलि रास में करुणा, अहिंसा, और मोक्ष प्राप्ति जैसे जैन धर्म के मूलभूत सिद्धांतों को प्रमुखता दी गई है।
- यह रचना धार्मिक कथा एवं उपदेशात्मक शैली में लिखी गई है।
- इसमें नैतिक शिक्षा और आध्यात्मिक उन्नति को प्रमुख रूप से दर्शाया गया है।

11. करकंड चरित रास

✓ रचनाकार – कनकामर मुनि

✓ विशेष तथ्य:

- यह रचना जैन धर्म के एक प्रमुख चरित्र "करकंड" के जीवन पर आधारित है।
- इसमें करकंड की वीरता, नीति, धर्मपरायणता और वैराग्य की कथा का वर्णन किया गया है।
- यह जैन धार्मिक साहित्य की परंपरा में एक महत्वपूर्ण ग्रंथ माना जाता है, जिसमें तप, अहिंसा और धर्म के प्रति समर्पण को प्रमुखता दी गई है।
- इसमें करकंड के संघर्षों, आध्यात्मिक जागृति और मोक्ष की ओर अग्रसर होने की घटनाओं को प्रस्तुत किया गया है।
- इस रचना में जैन धर्म के सिद्धांतों और आदर्शों को रोचक कथानक के माध्यम से उजागर किया गया है।

12. कुमारपाल प्रतिबोध

✓ रचनाकार – सोमप्रभ सूरि

✓ विशेष तथ्य:

- यह रचना गुजरात के प्रसिद्ध सोलंकी वंशीय राजा कुमारपाल के जीवन और जैन धर्म में उनकी आस्था पर आधारित है।
- इसमें राजा कुमारपाल के जीवन में हुए परिवर्तन, उनके जैन धर्म ग्रहण करने और अहिंसा के मार्ग पर चलने का वर्णन किया गया है।
- यह रचना जैन धर्म के सिद्धांतों – अहिंसा, करुणा, दया, और संयम – को उजागर करती है।
- सोमप्रभ सूरि ने इसमें जैन आचार्यों के उपदेशों और उनके प्रभाव को विस्तार से बताया है।
- इसमें राजा कुमारपाल की धार्मिक प्रवृत्तियों और उनके शासन में जैन धर्म के प्रचार-प्रसार को महत्वपूर्ण रूप से दर्शाया गया है।

13. प्रबंध चिंतामणि

✓ रचनाकार – आचार्य मेरुतुंग

✓ विशेष तथ्य:

- "प्रबंध चिंतामणि" जैन साहित्य का एक महत्वपूर्ण ऐतिहासिक और गद्य रचना ग्रंथ है।
- यह रचना 14वीं शताब्दी में लिखी गई, जिसमें कई ऐतिहासिक घटनाओं, राजाओं और संतों के जीवन-चरित का वर्णन किया गया है।
- इस ग्रंथ में पाँच प्रमुख प्रबंध (कथाएँ) शामिल हैं, जिनमें राजा कुमारपाल, विक्रमादित्य, सिद्धराज जयसिंह, भोजराज और चंद्रापीड के जीवन-चरित का उल्लेख किया गया है।
- रचना में ऐतिहासिक और पौराणिक प्रसंगों का मिश्रण किया गया है, जिससे यह न केवल एक ऐतिहासिक बल्कि एक शिक्षाप्रद ग्रंथ भी बन जाता है।
- आचार्य मेरुतुंग ने इसे जैन धर्म के सिद्धांतों के साथ ऐतिहासिक घटनाओं को जोड़कर लिखा, जिससे यह एक मूल्यवान ग्रंथ बन गया।
- इसमें नीति, धर्म, राजनीति और समाज के विभिन्न पहलुओं को अत्यंत प्रभावी शैली में प्रस्तुत किया गया है।

14. भरतेश्वर बाहुबली घोर रास

✓ रचनाकार – वज्रसेन सूरि

✓ विशेष तथ्य:

- यह रचना जैन धर्म के दो प्रमुख पात्रों – भरतेश्वर (अयोध्या के राजा) और बाहुबली (तक्षशिला के राजा) की वीरता और धार्मिक आदर्शों पर आधारित है।
- इसमें भरतेश्वर और बाहुबली के बीच हुए संघर्ष, उनके वीरता प्रदर्शन और अंततः बाहुबली के वैराग्य धारण करने की कथा का वर्णन किया गया है।
- यह रचना जैन धर्म के महत्वपूर्ण सिद्धांतों – अहिंसा, संयम, और मोक्ष के प्रति समर्पण को प्रमुखता से दर्शाती है।
- "भरतेश्वर बाहुबली घोर रास" विशेष रूप से बाहुबली की आध्यात्मिक यात्रा और उनके संन्यास ग्रहण करने की कथा को उभारता है।
- वज्रसेन सूरि ने इस ग्रंथ को काव्यात्मक शैली में लिखा, जिसमें वीर रस और शांत रस का सुंदर समन्वय किया गया है।

15. कान्हड़देव प्रबंध

✓ रचनाकार – पद्मनाभ

✓ विशेष तथ्य:

- "कान्हड़देव प्रबंध" एक ऐतिहासिक रचना है, जिसमें कान्हड़देव के जीवन, वीरता और संघर्ष का वर्णन किया गया है।
- इस रचना में 13वीं-14वीं शताब्दी के राजस्थान के सामाजिक और राजनीतिक हालात को दर्शाया गया है।
- मुख्य रूप से, इसमें जालौर के चौहान राजा कान्हड़देव और अलाउद्दीन खिलजी के आक्रमणों का विस्तृत वर्णन किया गया है।
- रचना में अलाउद्दीन खिलजी के जालौर आक्रमण और कान्हड़देव की बहादुरी को काव्यात्मक शैली में प्रस्तुत किया गया है।
- इसमें वीर रस की प्रधानता है और इसे राजस्थानी भाषा की श्रेष्ठ ऐतिहासिक रचनाओं में से एक माना जाता है।
- पद्मनाभ ने इस रचना में ऐतिहासिक तथ्यों के साथ कल्पना का भी समावेश किया, जिससे यह न केवल इतिहास बल्कि साहित्य की दृष्टि से भी महत्वपूर्ण बन गई।

16. श्रावकाचार

✓ रचनाकार – आचार्य देव सेन

✓ विशेष तथ्य:

- "श्रावकाचार" जैन धर्म के अनुयायियों (श्रावकों) के लिए आचार-संहिता के रूप में लिखी गई एक महत्वपूर्ण रचना है।
- इस ग्रंथ में जैन श्रावकों (गृहस्थ अनुयायियों) के कर्तव्यों, नैतिकता, संयम, और धार्मिक आचरण के नियमों का विस्तार से वर्णन किया गया है।
- रचना में अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, और अपरिग्रह जैसे पंच महाव्रतों की व्याख्या की गई है।
- यह ग्रंथ जैन धर्म के आचारशास्त्र का एक महत्वपूर्ण अंग माना जाता है और श्रावकों के लिए अनुकरणीय मार्गदर्शिका के रूप में प्रसिद्ध है।
- इसमें कुल 250 दोहे उपलब्ध हैं, जिनमें जैन धर्म के सिद्धांतों को सरल और प्रभावशाली भाषा में प्रस्तुत किया गया है।
- श्रावकाचार को जैन धर्म के उन ग्रंथों में गिना जाता है, जो धार्मिक आस्था को व्यवहारिक जीवन से जोड़ते हैं और मोक्ष प्राप्ति के मार्ग का निर्देश देते हैं।

3. सिद्ध साहित्य – 8वीं शती से 13वीं

- 12वीं, 13वीं शताब्दी के समय ही पूर्वी भारत में बौद्ध धर्म की वज्रयान शाखा के अनुयायियों द्वारा अपने धर्म के सिद्धांतों का प्रचार-प्रसार करने के लिए जो साहित्य हिन्दी भाषा/देश भाषा/जन भाषा में रचा गया, वही सिद्ध साहित्य कहलाता है।
- राहुल सांकृत्यायन ने इस साहित्य पर शोध कार्य करके सिद्धों की कुल संख्या 84 निर्धारित की है।
- ये सभी सिद्ध अपने नाम के अंत में आदर सूचक "पा" शब्द का प्रयोग करते हैं, जैसे:- सरहपा, शबरपा, लुइपा, कणहपा आदि।
- पं. हरप्रसाद शास्त्री ने भी इस साहित्य पर शोध कार्य करके इनकी रचनाओं का एक संकलन बंगला भाषा में "बौद्धगान-ओ-दोहा" के नाम से प्रकाशित करवाया था।
- आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने सिद्ध साहित्य की प्रशंसा करते हुए लिखा "जो जनता तत्कालीन नरेशों की स्वेच्छाचारिता, पराजय एवं पतन से त्रस्त होकर निराशावाद के गर्त में गिरी हुई थी, उस समय सिद्धों की वाणी ने उनके लिए संजीवनी बूटी का कार्य किया।"
- मुनि दत्तसुरि एवं मुनि अद्वयवक्त ने सिद्धों द्वारा प्रयुक्त भाषा को 'संधा अथवा संध्या' भाषा कहा है, जिसका शाब्दिक अर्थ होता है कुछ स्पष्ट एवं कुछ अस्पष्ट।
- सिद्ध साहित्य का विकसित रूप ही आगे चलकर नाथ साहित्य में परिवर्तित हुआ है।

सिद्ध → नाथ → संत

- हिन्दी साहित्य में "उलटबांसी शैली" का सर्वप्रथम प्रयोग सिद्ध साहित्य में ही हुआ है।
- बिहार के नालंदा एवं तक्षशिला विश्वविद्यालय सिद्धों के प्रमुख केंद्र माने जाते हैं।
यहीं से निकलकर "भोट" (तिब्बत) और बर्मा देश में इस साहित्य का प्रचार-प्रसार हुआ।

सिद्ध साहित्य की प्रमुख विशेषताएँ

- गेय पदों की शुरुआत की।
- इस साहित्य में तंत्र साधना पर बल दिया गया है।
- इसमें शिव एवं शक्ति के युगल रूप की उपासना की जाती है।
- जाति व्यवस्था एवं वर्ण व्यवस्था का विरोध किया गया है।
- ब्राह्मण धर्म एवं वैदिक धर्म के सिद्धांतों का खंडन किया गया है।
- सिद्धों में "पंचम मकार" (पाँच कुरीतियाँ) का उल्लेख भी मिलता है, यथा—
 - ✓ मास (मांस)
 - ✓ मछली
 - ✓ मदिरा
 - ✓ मुद्रा
 - ✓ मैथुन
- इस साहित्य को मुख्यतः तीन श्रेणियों में विभाजित किया जाता है—
 1. नीति या आचार संबंधी साहित्य (शांत व श्रृंगार रस)
 2. उपदेशपरक साहित्य
 3. साधना संबंधी या रहस्यवादी साहित्य

सिद्ध साहित्य की प्रमुख रचनाएँ एवं रचनाकार

क्र. सं.	कवि का नाम	रचना का नाम
1	सरहपा	दोहाकोश
	(सरहपाद, सरोज वज्र, राहुल भद्र)	
2	शबरपा	चर्यापद, महा बुद्ध वज्र गीति, वज्रयोगिनी साधना
3	लुङ्पा	लुङ्पाद गीतिका
4	डोंभिपा/डोंबिपा	डोंभि गीतिका, योगचर्या, अक्षरद्विकोपदेश
5	कण्हपा	कण्हपाद गीतिका, चर्याचर्य विनिश्चय
6	भूसुकपा	बोधिचयवितार
7	कुक्कुरिपा	चर्यापद, योगभावनोपदेश
8	आर्यदेवपा	कावेरी गीतिका
9	कंवणपा	चर्या गीतिका
10	कंबलपा	असंबंध सर्ग दृष्टि

4. नाथ साहित्य

- 12वीं-13वीं शताब्दी में भगवान शिव के अनुयायियों (नाथ संप्रदाय) द्वारा जो साहित्य हिंदी भाषा में रचा गया, वही **नाथ साहित्य** कहलाता है।
- नाथ साहित्य को **सिद्ध साहित्य का ही विकसित रूप** माना जाता है।
- डॉ. रामकुमार वर्मा ने नाथ साहित्य की समयावधि **12वीं से 14वीं शताब्दी** निर्धारित की है।
आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने नाथ संप्रदाय को "**सिद्ध मत**", "**सिद्ध मार्ग**", "**योग मार्ग**", "**अवधूत मत**" आदि नामों से पुकारा है।
- नाथ साहित्य के **9 प्रमुख नाथों** का सही क्रम—

1. आदिनाथ (शिव) – गुरु	6. ज्वालेन्द्रनाथ
2. मत्स्येन्द्रनाथ (मच्छिन्द्रनाथ)	7. चौरंगीनाथ
3. गोरखनाथ – प्रवर्तक (12वीं शताब्दी)	8. भर्तृहरि नाथ
4. चर्पट नाथ	9. गोपीचंद नाथ
5. गाहिणी नाथ	

नाथ साहित्य की प्रमुख विशेषताएँ

- गुरु और ज्ञान, निष्ठा को सर्वाधिक महत्व दिया गया।
- हिंदी साहित्य में **नारी की सर्वाधिक निंदा** इसी साहित्य में की गई है।
- सांसारिक भोग-विलास एवं मनोविकारों की भर्त्सना की गई है।
- **गृहस्थ धर्म के प्रति अनादर** इस साहित्य का प्रमुख दोष माना जाता है।
- **हठयोग साधना पद्धति** को अपनाया गया है, जिसमें-
 - ✓ मन, प्राण (वायु), शुक्र (तेज), वाक् (वाणी), कुण्डलिनी – इन पाँच तत्वों पर नियंत्रण करना आवश्यक माना गया।
 - ✓ हठयोग को "**राजयोग**", "**वज्रयोग**" एवं "**कुण्डलीयोग**" के नाम से भी जाना जाता है।
- गोरखनाथ द्वारा रचित "**सिद्ध-सिद्धांत पद्धति**" के अनुसार, "हठ" शब्द में प्रयुक्त 'ह' का अर्थ सूर्य एवं 'ठ' का अर्थ चंद्र ग्रहण किया जाता है।

नाथ साहित्य की प्रमुख रचनाएँ

- **नाथ साहित्य** के अंतर्गत प्राप्त होने वाली समस्त रचनाएँ या तो **गुरु गोरखनाथ** के द्वारा लिखी गई हैं अथवा उनके अनुयायियों द्वारा लिखी गई और **गोरखनाथ के नाम से प्रकाशित** करवा दी गई हैं।
- आरंभ में इस साहित्य की रचनाएँ **इधर-उधर बिखरी हुई** थीं।
- हिंदी साहित्य में **डी.लिट.** की उपाधि प्राप्त करने वाले **सर्वप्रथम विद्वान श्री पीताम्बर दत्त बड़थवाल** ने इन रचनाओं को संकलित करके "**हिंदी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग**" के माध्यम से "**गोरखबानी**" के नाम से प्रकाशित करवाया।
- श्री बड़थवाल ने **नाथ साहित्य की 40 रचनाओं** का उल्लेख किया है, जिनमें से केवल **14 रचनाओं को मान्यता प्रदान** की गई है। एवं इनमें से भी **13 रचनाओं का उन्होंने प्रकाशन** करवाया है—
- **मान्य 14 प्रमुख रचनाएँ**

1. सबदी (नाथ साहित्य की सबसे प्रामाणिक रचना)
2. पद
3. प्राण संकली
4. शिष्या दर्शन
5. नरवै बोध
6. अभै मात्रा जोग
7. आत्मबोध

8. पन्द्रह तिथि
9. सप्तवार
10. मच्छिन्द्र-गोरख संवाद
11. रोमावली
12. ज्ञान तिलक
13. पंचमात्रा
14. ज्ञान चौतीसा (यह अप्रकाशित है)

➤ अन्य महत्वपूर्ण रचनाएँ

(उपर्युक्त 14 रचनाओं के अतिरिक्त नाथ साहित्य में निम्नलिखित रचनाएँ भी मिलती हैं)

- | | |
|-------------------------|-------------------|
| 1. गोरख गणेश गोष्ठी | 5. योग चिंतामणि |
| 2. दत्त गोरख संवाद | 6. ज्ञाना मृत योग |
| 3. महादेव-गोरख संवाद | 7. योगबीज |
| 4. गोरखनाथ के सत्रह कला | |

➤ विशेष तथ्य

- ✓ "मच्छिन्द्र-गोरख संवाद" एक संवाद ग्रंथ मानी जाती है।
- ✓ इस रचना में गोरखनाथ जी द्वारा प्रश्न किए गए हैं और उनके गुरु मत्स्येन्द्रनाथ (मच्छिन्द्रनाथ) द्वारा उत्तर दिए गए हैं।
 - प्रश्नकर्ता - गोरखनाथ जी
 - उत्तरदाता - मत्स्येन्द्रनाथ

आदिकालीन स्वतंत्र साहित्य

- आदिकाल में कुछ रचनाएँ ऐसी भी प्राप्त होती हैं, जिन्हें पूर्वोक्त चारों प्रकार के साहित्यों में स्थान नहीं दिया जा सकता है।
- आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने इन्हें "फुटकल रचनाएँ" कहा है।
- डॉ. नगेन्द्र ने इसे "आदिकालीन स्वतंत्र साहित्य" नाम से उल्लेखित किया है।
- इन रचनाओं को "लौकिक साहित्य" के नाम से भी जाना जाता है। इसे पुनः दो भागों में विभाजित किया जाता है—

1. लौकिक पद्य साहित्य
2. लौकिक गद्य साहित्य

1. लौकिक पद्य साहित्य

- ✓ रचना - "ढोला मारू रा दूहा"
- ✓ लेखक – कवि कल्लोल एवं जैन कवि कुशललाभ
- ✓ Note:

- यह रचना सर्वप्रथम 1473 ई. में कवि कल्लोल के द्वारा रची गई थी। बाद में 1561 ई. में जैन कवि कुशललाभ द्वारा भी कुछ पद जोड़ दिए गए थे, जिसके कारण कुशललाभ को भी इसका सह-रचनाकार माना जाता है।
- सर्वप्रथम संपादन- इस रचना का सर्वप्रथम संपादन 1934 ई. में नागरी प्रचारिणी सभा, काशी के माध्यम से निम्नलिखित तीन विद्वानों द्वारा करवाया गया था—

1. श्री नरोत्तम स्वामी
2. श्री सूर्यकरण पारीक
3. श्री रामसिंह

- ✓ प्रमुख विशेषताएँ

- वियोग शृंगार रस प्रधान इस रचना में जयपुर के कछवाहा वंश के राजकुमार ढोला, बीकानेर के पिंगल राजा की पुत्री राजकुमारी मारवणी एवं मालवा की राजकुमारी मालवणी की त्रिकोणीय प्रेम गाथा वर्णित है।
- इस रचना का मूल रूप शृंगार रस से युक्त दोहों में प्राप्त होता है।
- बीकानेर क्षेत्र में आज भी यह रचना निम्नलिखित शब्दों में प्रशंसा प्राप्त करती है- "सोरिठियो बे दूहो भलो, भली मरवण री बात। जोबन छाई धण भली, तारा छाई रात।।"

2. कवि विद्यापति (1350-1460 ई.)

✓ प्रमुख रचनाएँ

- कीर्तिलता (1380 ई.) – अपभ्रंश मिश्रित हिंदी
- कीर्तिपताका (1403 ई.) – अपभ्रंश मिश्रित हिंदी
- पदावली (1403 ई.) – मैथिली भाषा में रचित

✓ विशेष तथ्य

- कीर्तिलता व कीर्तिपताका में अवहट्ट भाषा तथा पदावली में मैथिली भाषा का प्रयोग हुआ है।
- अवहट्ट – अपभ्रंश मिश्रित हिंदी।
- मैथिली भाषा में सरस काव्य रचना करने के कारण इन्हें "मैथिल कोकिल" कहा जाता है।
- इनकी पदावली रचनाएँ जयदेव द्वारा रचित "गीत गोविंद" की शैली में लिखी गई हैं, इसलिए इन्हें "अभिनव जयदेव" भी कहा जाता है।
- हिंदी साहित्य में इनको कुल 16 उपाधियाँ प्राप्त हुई हैं।
- कीर्तिलता में तिरहुत प्रदेश के राजा कीर्तिसिंह की वीरता एवं उदारता का वर्णन किया गया है।
- कीर्तिलता में जौनपुर प्रदेश का भी वर्णन मिलता है।
- आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने कीर्तिलता को "मृग-भृंगी संवाद" कहा है।
- कीर्तिपताका में राजा शिव सिंह की वीरता एवं उदारता का उल्लेख है।
- पदावली में राधा एवं कृष्ण की कथा वर्णित है।
- विद्यापति को हिंदी साहित्य में कृष्ण को काव्य का विषय बनाने वाले सर्वप्रथम कवि माना जाता है।
- ये शैव मतानुयायी भी माने जाते हैं।
- इन्होंने भगवान शिव की भक्ति में पद रचे थे, जिन्हें "नचारी" कहा जाता है और प्रायः नृत्य के साथ गाया जाता है।

3. जयचंद प्रकाश

- ✓ रचनाकार – भट्ट केदार
- ✓ रचनाकाल – 1168 ई.

4. जयमयंक जस चंद्रिका

- ✓ रचनाकार – मधुकर कवि
- ✓ रचनाकाल – 1186 ई.
- ✓ विशेष तथ्य

- इन दोनों रचनाओं में कन्नौज के राजा जयचंद की प्रशंसा की गई है।
- ये दोनों रचनाएँ वर्तमान में उपलब्ध नहीं हैं।
- इनका उल्लेख दयालदास सिंधायच द्वारा रचित "राठौड़ा री ख्यात" में मिलता है।

5. वसंत विलास